Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, OCT-NOV, 2021, VOL-9/48

हाईस्कूल स्तर पर सह–शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं व्यक्तित्व गुणों का तुलनात्मक अध्ययन

शुभ्रा पी0 काण्डपाल[1], Ph. D. & प्रकाश चन्द्र उप्रेती[2]

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, बी0एड0 विभाग, एम0 बी0 जी0 पी0 जी0 कॉलेज हल्द्वानी ,कुमाँऊ विश्वविद्यालय।

[2]पी0एच0डी0 शोधार्थी एम0 बी0 जी0 पी0 जी0 कॉलेज हल्द्वानी ,कुमाँऊ विश्वविद्यालय।

Paper Received On: 25 NOV 2021
Peer Reviewed On: 30 NOV 2021
Published On: 1 DEC 2021

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन हाईस्कूल स्तर पर सह–शिक्षा तथा एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व व्यक्तित्व गुणों पर किया गया है। वर्तमान शोध में अल्मोड़ा जिले के हवालबाग ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर के सहशिक्षा तथा एकल शिक्षा विद्यालयों में उत्तराखंड बोर्ड से पड़ने वाले विद्यार्थियों पर किया गया है। उक्त शोध में समायोजन क्षमता मापन के लिए प्रो0 ए0 के0 सिन्हा एवं प्रो0 आर0 पी0 सिंह की (AISS-SS) तथा व्यक्तित्व गुणों के मापन के लिए डॉ0 एन0 क0 चड्डा तथा श्रीमती सुनंदा चंदना की (DTS-SCALE) का प्रयोग किया गया है तथा न्यादर्श का चयन अयादृच्छिक न्यादर्श की कोटा न्यादर्श विधि से किया गया है इस शोध में U- परीक्षण का प्रयोग किया गया है तथा निष्कर्ष में एकल व शिक्षा विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर पाया गया है

शब्दकुंजी :– *(1) समायोजन क्षमता (2) व्यक्तित्व गुण (3) सह–शिक्षा (4) एकल शिक्षा*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :–वर्तमान युग को मानव जाति के इतिहास का सर्वाधिक भौतिकवादी युग माना जा सकता है। ऐसे युग में एक विद्यार्थी के जीवन का अन्तिम लक्ष्य भौतिक सुविधाओं का अर्जन करना बन गया है। यह लक्ष्य विद्यार्थियों को एक पथभ्रष्ट या दिशाहीन जीवन की ओर धकेलता जा रहा है। विद्यार्थियों की आवश्यकताएँ जो कभी शिक्षा ग्रहण करने तक ही सीमित थी, आज सुरसा के मुख की तरह बढ़ती जा रही हैं। भौतिकतावादी संसार में जीवन मूल्यों का पतन होता जा रहा है। विद्यार्थी आज अपने प्राचीन मूल्यों तथा सामाजिक गुणों को भूलते जा रहे हैं। आज बदलते हुए इस युग में विद्यार्थियों में सामाजिक व्यवहार का गुण भी व्यक्तिगत आकांक्षाओं से प्रेरित है, जो निस्सन्देह प्राचीन सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों से नहीं वरन् आज के भौतिक मूल्यों से प्रभावित हो चुकी हैं। आज के संसार में शिक्षा के मन्दिर विद्यार्थियों को ऐसा वातावरण प्रदान कर पाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं, जो उनमें समायोजन, आत्म–सम्प्रत्यय, सामाजिक व्यवहार जैसे गुणों का विकास कर सकें और जो उन्हें भारतीय संस्कृति की पहचान रहे मूल्यों से जोड़ सकें। मानव की महानता उसके व्यक्तित्व के गुणों से जुड़ी है। मानव के व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए उसके विभिन्न घटकों या गुणों का विकास आवश्यक

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

होता है। विकसित व्यक्तित्व वाले विद्यार्थी ही एक विकसित और महान राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले गुणों में समायोजन महत्वपूर्ण है। अपनी आवश्यकताओं और उसकी पूर्ति के साधनों के मध्य सन्तुलन बनाये रखने का यह गुण यदि विद्यार्थी में नहीं हो तो उसके व्यक्तित्व का सहज विकास सम्भव नहीं हो सकता।

समाज में किसी व्यक्ति के व्यवहार का और अन्ततः उसके व्यक्तित्व का उसके द्वारा अपनाये गये मूल्यों से गहन सम्बन्ध होता है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, निःस्वार्थ प्रेम, शान्ति और दया जैसे सहज और शाश्वत मूल्य इस भौतिकतावादी युग में निरन्तर विघटित होते जा रहे हैं। अतः निश्चित रूप से आज आवश्यकता विद्यार्थियों को इस प्रकार की शिक्षा प्रदान करने की है, जो उनमें समायोजन की योग्यता, जीवन और स्वयं के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण, समाज के प्रति उत्कृष्ट व्यवहार तथा मूल्यों का विकास कर सके, जिससे की वह समाज और देश को 'विश्व–गुरू' की प्राचीन प्रतिष्ठा पुनः लौटा सके। आज शिक्षा शास्त्र, समाज–शास्त्र, विज्ञान और मनोविज्ञान के क्षेत्र में किये जा रहे शोधकार्यों का प्रमुख उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व को श्रेष्ठता प्रदान करने से सम्बन्धित रह गया है। शोध के इस प्रमुख उद्देश्य की पूर्ति हेतु विचार क्षेत्र विद्यार्थी, शिक्षक, समाज, शिक्षण–विधि, तथा पाठ्यचर्या पर केन्द्रित हो जाता है। आज का विद्यार्थी कल की सामाजिक एवं राष्ट्रीय धरोहर है तथा उसे सकुशल रखने एवं अपने दायित्व के निर्वहन की योग्यता प्रदान करने के साथ–साथ शिक्षक उसके विकास, उन्नति, एवं अभ्युदय की कल्पना करता है। शिक्षक अपने छात्र का भविष्य सुखद एवं निरापद रखना चाहता है। किन्तु ऐसा किस प्रकार किया जाये, आज के विद्यार्थी को कल का श्रेष्ठ नागरिक किस प्रकार बनाया जाये? यह एक विचारणीय प्रश्न सदैव ही रहा हैं। शिक्षक चाहकर भी छात्र को अपने मनोनुकूल साँचे में नही ढ़ाल पाता। जैविकीय दृष्टि से समानताएँ होने पर भी शिक्षक एवं विद्यार्थी के मनोविज्ञान में अन्तर होता है। व्यक्ति के मूल्यों, चरित्र, कल्पना, विचारों, तर्क, आत्म–बोध, व्यवहार समायोजन, रूचि आदि सर्वथा भिन्न होते हैं। विद्यार्थी भी ऐसे मनावैज्ञानिक गुणों में शिक्षक से भिन्न होते हैं। शिक्षा का उद्देश्य ही मानव के व्यक्तित्व का परिमार्जन है। भौतिकता के प्रभाव से विद्यार्थियों को मुक्त रखते हुए उन्हें किस प्रकार देश व समाज के उपयुक्त मनुष्य के रूप में विकसित किया जाये इसका समाधान शिक्षा पद्धति व शिक्षकों के समक्ष विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व मनोवैज्ञानिक शील गुणों को अधिकाधिक स्पष्ट रूप में रखने से ही सम्भव है। **जैमन, जी0एस0 (1982) ने 'विद्यार्थियों के नैतिक चरित्र व व्यक्तित्व समायोजन में सम्बन्ध'** विशय पर शोधकार्य करके अपने भोध अध्ययन के निश्कर्शों में पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं का नैतिक चरित्र उच्च पाया गया। **लेकी0पी0 (1996) ने 'समायोजन तथा व्यक्तित्व के सिद्धान्त'** विशय पर भोधकार्य कर बताया कि समायोजित व्यक्तियों का व्यक्तित्व उत्कृश्ट होता है। जबकि असमायोजित व्यक्तियों का व्यक्तित्व अंतर्मुखी होता है। **गोलछा, छाया (1998) ने 'समायोजन व नैराश्य का विद्यार्थियों की सीखने की गति व विकास पर प्रभाव'** से

सम्बन्धित भोध कार्य सम्पन्न कर बताया कि विद्यार्थियों की प्रवृत्ति, झुकाव उनके सीखने की गति का निर्धारक तत्व है। उनके समायोजन की भाक्ति का प्रभाव सीखने की गति व क्षमता पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है। **भारती, ए0 के0 (2010), ने 'ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन'** से निष्कर्ष निकला कि ग्रामीण क्षेत्र के लड़के व लड़कियों में शहरी क्षेत्र के लड़के व लड़कियों की अपेक्षा व्यक्तित्व समायोजन कम है। **मन्जू (2011) ने 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'** के निष्कर्ष में यह पाया गया कि ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है

वर्तमान समय में हम देखते हैं कि विद्यार्थियों के जीवन और व्यक्तित्व पर इस भौतिक युग का दुष्प्रभाव पड़ने की संभावना अधिक होती है तथा ऐसी स्थिति में उनका अपने कर्तव्य पथ से भटकना और दुर्व्यसनों में लिप्त हो जाना सहज हो जाता है। इसका दुष्प्रभाव यह होता है कि उनके व्यक्तित्व का विकास उनके व्यवसाय और भविष्य के समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं हो पाता है। परिणामतः देश को नवीनतम ऊँचाईयों की ओर ले जाने वाले भविष्य के ये कर्णधार देश के लिए विकास में योगदान देने के स्थान पर निजी हित के पूजक बनकर अयोग्य नागरिक सिद्ध होते हैं और देश को पतन की ओर अग्रसर कर देते है। अतः प्रस्तुत समस्या को अध्ययन हेतु चयनित करना इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि हम यह ज्ञात कर सकें कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली के विद्यार्थियों में समायोजन, तथा व्यक्तित्व मूल्यों का स्तर क्या है। विद्यार्थी आगे चलकर देश की प्रगति में, समाज का एक उपयोगी अंग बनकर सहयोग दें।

शोध कार्य के उद्देश्यः—

- सह—शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता की तुलना करना।
- सह—शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों की तुलना करना।

शोध परिकल्पनाएँः—

- सह—शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सह—शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है सह—शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालय में पढ़ने वाले छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सह—शिक्षा एवं एकल शिक्षा विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध विधि :– प्रस्तुत शोध में **सर्वेक्षण विधि (Survey Mathod)** का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या :– प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या का तात्पर्य अल्मोड़ा जिले के हवालबाग ब्लॉक के हाईस्कूल स्तर पर उत्तराखण्ड बोर्ड में एकल एवं सह–शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों से है।

न्यादर्श :–प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श अल्मोड़ा जिले के एकल शिक्षा विद्यालयों में राजकीय इण्टर कॉलेज, अल्मोंड़ा, राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज, अल्मोंड़ा, आदर्श इण्टर कॉलेज, अल्मोंड़ा, आर्य कन्या इण्टर कॉलेज अल्मोंड़ा तथा सह–शिक्षा वाले विद्यालयों में राजकीय इण्टर कॉलेज, लोधिया तथा राजकीय इण्टर कॉलेज, स्यालीधार के हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् 120 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। तथा न्यादर्श का चयन अयादृच्छिक प्रतिचयन की कोटा न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया है।

तलिका 1– न्यादर्श

कम संख्या	विद्यालय	लैंगिक स्थिति	कुल संख्या
1	सह–शिक्षा विद्यालय	छात्र	30
		छात्राएँ	30
2	एकल शिक्षा विद्यालय	छात्र	30
		छात्राएँ	30
कुल न्यादर्श		**120**	

शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण :– प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधानकर्ता ने दो मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया है जो निम्नलिखित है :–

- **समायोजन मापनी :–** प्रो0 ए0 के0 सिन्हा एवं प्रो0 आर0 पी0 सिंह द्वारा निर्मित समायोजन मापनी (AISS-SS) का प्रयोग किया गया है। जो विद्यालयी विद्यार्थियों के समायोजन के तीन पक्ष संवेगात्मक समायोजन, सामाजिक समायोजन व भौक्षिक समायोजन का मापन करती है।
- **चित्त–प्रकृति मापनी [Dimension of Temperament Scale (DTS)]** :– डॉ0 एन0 के0 चड्ढा व श्रीमती सुन्नदा चन्दना द्वारा निर्मित DTS Scale विद्यार्थियों के व्यक्तित्व गुणों का मापन करता है। इसमें व्यक्तित्व गुणों (चित्त–प्रकृति) को 15 विमाओं में मापा गया है,

शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

भोधकार्य में विभिन्न उपकरणों से प्राप्त सूचनाओं से निश्कर्श निकालने के लिए आवश्यक है कि सांख्यिकीय आधार पर उनका विश्लेशण किया जाए। अतः शोधार्थी ने प्रस्तुत भोध कार्य में प्राप्त आँकड़ों को SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से सामान्य प्रायिकता वक्र पर वितरण की जाँच की गयी व पाया कि आँकड़ों का वितरण सामान्य नहीं है। इसलिए भोधकर्ता ने इस लघु भोध कार्य में आँकड़ों के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

विश्लेशण के लिए प्रतिशत तथा मान्न विटनी 'यू परीक्षण' (Mann-Whitney U Test) का प्रयोग किया है तथा इस भोध कार्य की सभी सांख्यिकीय संगणनाएँ SPSS सॉफ्टवेयर द्वारा की गयी है।

प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्याः–

तलिका –2: सह–शिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों के समायोजन क्षमता की तुलनाः

कम सं0	विद्यालय का नाम	न्यादर्श	मध्यमान रैंक	U मान	P मान	सार्थकता स्तर (0.05)
1	एकल शिक्षा	30	36.75	262.50	0.006	सार्थक
2	सह–शिक्षा	30	24.25			
योग –		60				

तालिका संख्या 2 से स्पश्ट होता है कि परिक्षण के परिणाम पूर्वानुमान के समान नही है जहाँ U का मान 262.500 तथा P = 0.006< 0.05 = α है तथा एकल ि ाक्षा विद्यालय के छात्रों की मध्यमान रैंक 36.75 और सह–शिक्षा विद्यालय के छात्रों की मध्यमान रैंक 24.25 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर है। तथा इस पर मान्न विटनी 'यू परीक्षण' (Mann-Whitney U Test) का मान सार्थक है। अर्थात् सह–शिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है। किन्तु दोनों समूहों के मध्यमान रैंक से स्पश्ट है कि सह–शिक्षा विद्यालय के छात्र एकल शिक्षा विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा अधिक समायोजित प्रतीत होते है। इसका कारण यह हो सकता है कि सह शिक्षा विद्यालयों में दोनों ही लिंग के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं तथा शिक्षक भी महिला पुरुष दोनों प्रकार के होते हैं इससे सह शिक्षा विद्यालयों का वातावरण कुछ हद तक आदर्श सामाजिक स्थिति के समकक्ष हो जाता है

तलिका–3: सह– शिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं के समायोजन क्षमता की तुलनाः

कम सं0	विद्यालय का नाम	न्यादर्श	मध्यमान रैंक	U मान	P मान	सार्थकता स्तर (0.05)
1	एकल शिक्षा	30	37.32	245.50	0.002	सार्थक
2	सह–शिक्षा	30	23.68			
योग –		60				

तालिका संख्या 3 से स्पश्ट होता है कि परिक्षण के परिणाम पूर्वानुमान के समान नही है जहाँ U का मान 245.50 तथा P = 0.002 <0.05 = α है तथा एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की मध्यमान रैंक 31.32 और सह–शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की मध्यमान रैंक है जो सार्थकता के 0.05

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

स्तर पर है। तथा इस पर मान्न विटनी 'यू परीक्षण' (Mann-Whitney U Test) का मान सार्थक है। अर्थात् सह–शिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की समायोजन क्षमता में सार्थक अन्तर है। किंतु मध्यमान रैंक से प्रतीत होता है कि सह शिक्षा विद्यालय के छात्राओं का समायोजन एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं की अपेक्षा कुछ अधिक है इसका कारण भी सह–शिक्षा विद्यालयों का शैक्षिक वातावरण जो काफी हद तक समाज का प्रतिदर्श होता है वह हो सकता है

तलिका –4: सहशिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों की तुलनाः

कम सं0	विद्यालय का नाम	न्यादर्श	मध्यमान रैंक	U मान	P मान	सार्थकता स्तर (0.05)
1	एकल शिक्षा	30	32.60	387.00	0.351	निरर्थक
2	सह–शिक्षा	30	28.40			
योग –		60				

तालिका संख्या 4 से स्पश्ट होता है कि परिक्षण के परिणाम पूर्वानुमान के समान है जहाँ U का मान 387.00 तथा P = 0.351 >0.05 = α है तथा एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की औसत रैंक 32. 60 और सह–शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की रैंक 28.40 है जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर है। तथा इस पर मान्न विटनी 'यू परीक्षण' (Mann-Whitney U Test) का मान निरर्थक है। अर्थात सहशिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है तथा मध्यमान रैंक के आधार पर देखा जाए तो एकल शिक्षा विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व गुण सह शिक्षा विद्यालय के छात्रों की अपेक्षा कुछ अधिक है इसका कारण एकल शिक्षा विद्यालयों में केवल एक लिंग को ध्यान में रखकर अपनाई जाने वाली शिक्षण विधियां व गतिविधियां हो सकती हैं।

तलिका–5: सह–शिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों की तुलनाः

कम सं0	विद्यालय का नाम	न्यादर्श	मध्यमान रैंक	U मान	P मान	सार्थकता स्तर (0.05)
1	एकल शिक्षा	30	35.98	285.50	0.015	सार्थक
2	सह–शिक्षा	30	25.02			
योग –		60				

तालिका संख्या 5 से स्पश्ट होता है कि परिक्षण के परिणाम पूर्वानुमान के समान नही है जहाँ U का मान 285.50 तथा P = 0.015 <0.05 = α है तथा एकल शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की औसत रैंक 35.98 और सह–शिक्षा विद्यालय के छात्राओं की रैंक 25.02 है। जो सार्थकता के 0.05 स्तर पर है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

तथा इस पर मान्न विटनी 'यू परीक्षण' (Mann-Whitney U Test) का मान सार्थक है। अर्थात् सहशिक्षा एकल शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर पाया गया । मध्यमान रैंक से भी ज्ञात होता है कि एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व गुण सहशिक्षा विद्यालय की छात्राओं के व्यक्तित्व गुणों की तुलना में अधिक हैं इसका कारण एकल शिक्षा बालिका विद्यालयों में केवल महिला शिक्षकों का होना तथा उनके द्वारा क्रियान्वित गतिविधियां हो सकती हैं

शोध परिणाम तथा निष्कर्षः–

- सह–शिक्षा तथा एकल शिक्षा विद्यालय के छात्रों की समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर होता है।
- सह–शिक्षा तथा एकल शिक्षा विद्यालय की छात्राओं के समायोजन क्षमता में सार्थक अंतर होता है
- सह–शिक्षा तथा एकल शिक्षा विद्यालय के छात्रों के व्यक्तित्व गुणों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है
- सह–शिक्षा व एकल शिक्षा विद्यालयों की बालिकाओं के व्यक्तित्व गुणों में सार्थक अंतर होता है
- एकल शिक्षा की अपेक्षा सह–शिक्षा विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता उच्च होती है

शोध कार्य हेतु शैक्षिक निहितार्थः–

शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान से संबंधित शोध प्रयास तब तक अर्थ पूर्ण नहीं हो सकते जब तक कि इनकी संबंधित क्षेत्र में प्राप्त परिणामों की उपादेयता ना हो नहीं तो शोधकर्ता द्वारा किया गया शोध कार्य व्यर्थ चला जाता है शिक्षा शास्त्र मनोविज्ञान एवं समाज विज्ञानों में शोध का प्रमुख उद्देश्य संबंधित क्षेत्र में व्याप्त कमियों को दूर कर शिक्षा व्यवस्था एवं शैक्षिक गुणवत्ता को अधिक सुदृढ़ वह सशक्तिकरण करना है प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष शिक्षा के क्षेत्र में निम्न प्रकार से उपयोगी साबित होंगे।

- **अभिभावकों हेतुः–** अध्ययन से ज्ञात होता है कि आज के समय में विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता व व्यक्तित्व गुणों का स्थान न्यून है जिसके कारण उनकी संतानें गलत राह की ओर अग्रसर हो रही है अभिभावक को चाहिए कि वह अपनी संतानों को अच्छे संस्कार दें तथा अपने संतानों को सुरक्षित विश्वस्त और सहयोगी पारिवारिक वातावरण प्रदान करें जिससे उनमें अपने मित्रों परिवारिक सदस्यों व समाज में समायोजन की भावना जागृत हो किशोरावस्था में विद्यार्थी अनेक समस्याओं से घिरे रहते हैं जिनसे दिग्भ्रमित होकर वह गलत राह को चुन लेते हैं ऐसे में अभिभावकों को उनकी समस्याओं को समझना चाहिए तथा उनमें समायोजन व उच्च व्यक्तित्व गुण विकसित करने हेतु प्रयास करने चाहिए।

- **शिक्षकों हेतुः–** शिक्षकों के लिए सुझाव यह है कि यदि किसी विद्यार्थी के व्यवहार में परिपक्वता दिखे तो वह उसके माता–पिता से संपर्क करें और कारणों का पता लगाकर युक्ति पूर्वक परिपक्वता की ओर अग्रसर करें विद्यालय के वातावरण को स्वस्थ प्रतिस्पर्धायुक्त व प्रेरणादायी बनाए जिससे विद्यार्थियों में उच्च समायोजन क्षमता व्यक्तित्व गुणों का विकास संभव हो सके।
- **पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए सुझावः–** प्रस्तुत शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार छात्रों के व्यक्तित्व गुणों का स्तर पाया गया है पाठ्यक्रम निर्माताओं को चाहिए कि वे पाठ्यक्रम की विषय वस्तु में ऐसे प्रकरणों तथा गतिविधियों का समावेश करें जिससे विद्यार्थियों में उच्च व्यक्तित्व गुणों का का विकास हो सके।
- **निर्देशन व मार्गदर्शन हेतु सुझावः–** प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता और व्यक्तित्व गुणों का स्तर बहुत कम है इसलिए विद्यार्थियों को उचित निर्देशन व परामर्श की आवश्यकता है अतः शोध के परिणामों द्वारा निर्देशक व मार्गदर्शक उन्हें उचित सलाह देकर विद्यार्थियों में उचित समायोजन क्षमता व्यक्तित्व गुणों का विकास करने में सहायक हो सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

गोलछा, छाया (1998) 'समायोजन व नैराश्य का विद्यार्थियों की सीखने की गति व विकास पर प्रभाव
जैमन, जी0एस0 (1982) 'विद्यार्थियों के नैतिक चरित्र व व्यक्तित्व समायोजन में सम्बन्ध'।
पाठक,पी.ड़ी. – ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (2007), पृष्ठ संख्या – 450।
भटनागर, सुरेश ''शैक्षिक प्रबन्ध एवं शिक्षा की समस्याएँ'', सूर्य पब्लिकशन, मेरठ (1996),
भारती, ए0 के0 (2010), ने 'ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के किशोरों के व्यक्तित्व समायोजन का अध्ययन'
मन्जू (2011) ने 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तिव और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
लेकी0पी0 (1996) 'समायोजन तथा व्यक्तित्व के सिद्धान्त' डेजरटेशन एब्सट्रेक्ट इंटरने ानल, वाल्यूम 22, संख्या 7, फरवरी 1997, पृं0 सं0 161।
वर्मा रचना मोहन भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जुलाई–दिसम्बर 2004, पृ0 सं0 5–9।
त्रिपाठी, बी0सी0 (2007) 'बी0एड0 महाविद्यालयों के विद्यार्थी अध्यापकों के समायोजन की जाँच'।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language